भोजशाला मंदिर के बारे माइकल विलिस और जर्मन इंडोलॉजिस्ट एलोइस एंटोन फ्यूहरर ने क्या कहा

यह धार जिले वेबसाइट के अनुसार, राजा भोज ने धार में एक कालेज की स्थापना की थी जिसे बाद में भोजशाला के नाम से जाना जाने लगा|

माइकल विलिस ने कहा (भोजशाला मंदिर):-

इसी समय धार, भोज और सरस्वतीः फ्राम इन्डोलोजी टू पॉलिटिकल माइक्रोलॉजी एंड वैंक" शीर्षक वाले अपने पेप में, **माइकल विलिस** ने कहा, "ईमारत में इस्तेमाल किये गये विभिन्न प्रकार के खम्भे, और फर्श पर खुदी हुयी गोलियों की संख्या अभी भी दिखाई देती है, इसके साथ- साथ ही अन्य शिला लेख भी प्रदर्शित हैं | दीवारों से पता चलता है कि इस ईमारत के लिए सामग्री व्यापक क्षेत्र में कई पुराने स्थलों से एकत्र की गई थी |

जर्मन इंडोलॉजिस्ट एलोइस एंटोन फ्यूहरर के अनुसार:-

एएसआई के लिए काम करने वाले जर्मन इंडोलॉजिस्ट **एलोइस एंटोन फ्यूहरर** ने 1893 में मध्य भारत की यात्रा की और मस्जिद परिषर को "भोज का स्कूल" शव्द के साथ रिकोर्ड किया |

विलिस ने उसी दौरान यह भी कहा कि मस्जिद के निर्माण में दिल्ली में कुतुव (मीनार) के नकल की गई थी और इन्मर्तों से मंदिर सामग्री का उपयोग नहीं किया गया था क्योंकि कुछ और उपलब्ध नहीं था या मंदिर के खम्भे :"इस्लामिक वर्चस्व का विजयी प्रदर्श" थे |

ग्राउंड-पेनेट्रेटिंग रडार (GPR) क्या है ?

ASI द्वारा दफन विशेषताओं का 3-D मॉडल तैयार करने के लिए GPR तकनीक का प्रयोग किया जाता है |

GPR मुख्यतः एक सतह एंटीना में एक छोटे रडार आवेग द्वारा संचालित होता है और उपमृदा से परवर्ती संकेतों (लौट के आने वाले) के समय व परिमाण (डाटा) को रिकार्ड करता है |

रडार की किरणों का एक शंकु की तरह प्रकीर्णन होता है, जिसमें एंटीना द्वारा वस्तु के उपर से गुजरने से पूर्व प्रतिबिम्ब उत्पन्न होता है |

रडार की किरणों का एक शंकु की तरह प्रकीर्णन होता है, जिससे ऐसे प्रतिबिम्ब बनते है जो शीधे भौतिक आयामों के अनुरूप नहीं होते हैं, जिसमें आभासी प्रतिबिम्ब बनते हैं |